# PROGRAM STRUCTURE

## Program Specific Outcomes

1. संस्कृतभाषायाः परिचयः, शास्त्रसाहित्यपुष्टतायाः अवगमः च ।
2. संस्कृतभाषायां पठने आशयविनिमये च कौशलसंपादनम् ।
3. आङ्गलादिभाषात्रयपरिज्ञानसम्पादनं, ततः सामूहिकप्रश्नानाम् अवगमः, प्रतिक्रियाम् आविष्कर्तुं सामर्थ्यसंपादनं च ।
4. भारतीयन्यायशास्त्रविज्ञानस्य अवधारणं शास्त्रपठनेषु समन्वयकरणं च ।
5. सूचनाविज्ञानद्वारा न्यायशास्त्रस्य आधुनिकरीत्या उपस्थापनम् ।
6. वादप्रक्रियायाः अवगमपूर्वकं संभाषणे वादे विचारे च सामर्थ्यसंपादनम् ।
7. युक्तिसमीक्षापूर्वकं शोधनप्रक्रियायां निर्णयकरणे च कौशलस्य पोषणम् ।
8. वैशेषिकपदार्थविज्ञानद्वारा प्राचीनभारतीयभौतिकशास्त्रस्य अवगमः ।
9. न्यायवैशेषिकप्रक्रियायाः सामाजिकजीवने प्रसक्ततायाः अवगमः, समन्वयश्च।|

*****************************************************

1. Acquire fundamental knowledge of Sanskrit and its richness in Literature, Philosophy and Science.
2. Gain skill to understand Sanskrit and Communicate in Sanskrit.
3. Acquire the basic Language skills of a minimum of three languages including the global language; get sensitized on major contemporary social issues through representative works in these languages; critically respond and effectively articulate the same in writing and speech.

4. Acquire a comprehensive knowledge on Indian Logic and its application in Sastra study
5. Present Nyaya Sastra using modern technology with the help of sufficient knowledge on informatics.
6. Achieve ability to do discussions and debates by understanding theories of argumentation in Nyaya
7. Enrich the skill to do research and determine by the power of reasoning and investigating.
8. Understand the ancient Indian material science through the study of Vaiseshika Categorology.
9. Understand the relevance of Nyaya Vaiseshika in personal and social life to applying it.

**********************

# Course Distribution

COURSES FOR BA IN SANSKRIT NYAYA

SEMESTER-I

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| CORE COURSE | IBUNYM-521 | न्यायवैशेषिकदर्शनेतिहासः | 2 | 2 |
| COMPLEMENTARY COURSE | ICUNYM-522 | तर्कसंग्रहः ( प्रमेयभागः) | 2 | 2 |

SEMESTER-II

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| CORE COURSE | IIBUNYS-523 | न्यायसूत्रम्-प्रथमाध्यायः | 2 | 2 |
| COMPLEMENTARY COURSE | IICUNYS-524 | तर्कसंग्रहः -प्रमाणभागः | 2 | 2 |

SEMESTER-III

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| COMMON CORE COURSE | IIBUNYM-525 | तर्कसंग्रहदीपिका- I (प्रत्यक्षखण्डः) | 2 | 2 |

SEMESTER-IV

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| COMPLEMENTARY COURSE | IVCUNYS-526 | कारिकावली (प्रत्यक्षखण्डम्) – न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रप्रकरणग्रन्थः | 3 | 3 |

SEMESTER - V

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| CORE COURSE | VBUNYM-527 | Tarkabhasha (तर्कभाषा) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VBUNYM-528 | Syncretic Nyaya Vaiseshika (न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रप्रकरणग्रन्थः) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VBUNYM-529 | Tarkasangrahadipika – II (तर्कसङ्ग्रहदीपिका – II अनुमानखण्डादारभ्य ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्ता) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VBUNYM-530 | Study of Multi-faceted Dimensons of Indian Logic (**भारतीयतर्कशास्त्रस्य बहुमुखतापरिचयः**) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VBUNYM-531 | Informatics | 4 | 4 |
| OPEN COURSE | VDUNYM-532 | Sabdabodha Theories (शाब्दबोधविचाराः) | 4 | 4 |
| OPEN COURSE | VDUNYM-533 | Fundamentals of Nyaya and Vaiseshika (न्यायवैशेषिकयोः मौलिकाध्ययनम्) | 4 | 4 |
| OPEN COURSE | VDUNYM-534 | Indian Philosophical Systems (भारतीयदर्शनप्रणालिका) | 4 | 4 |

SEMESTER – VI

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| CORE COURSE | VIBUNYS-535 | Nyaya Bhashyam – I & II (न्यायभाष्यं – I &II अध्यायौ) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VIBUNYS-536 | Preliminaries of Vaiseshika (वैशेषिकदर्शनस्य प्रकरणग्रन्थः) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VIBUNYS-537 | Definition of Vyapti (व्याप्तिलक्षणम्) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VIBUNYS-538 | Nyaya Theory of Meaning (न्याये शब्दार्थसिद्धान्तः) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VIBUNYS-539 | Ecological aspects in Nyaya and Ayurveda (पर्यावरणविज्ञानम् न्याये आयुर्वेदे च) | 4 | 4 |
| CORE COURSE | VIBUNYS-540 | Project | 2 | 2 |
| CHOICE BASED COURSE | VIBUNYS-541 | Kerala Tradition of Nyayasastra (कैरलन्यायशास्त्रसम्प्रदायः) | 4 | 4 |
| CHOICE BASED COURSE | VIBUNYS-542 | Sankhyakarika (सांख्यकारिका) | 4 | 4 |
| CHOICE BASED COURSE | VIBUNYS-543 | Theory of Argumentation in Nyaya and Modern Law | 4 | 4 |

COURSES FOR BFA FROM SANSKRIT NYAYA

SEMESTER IV

| COURSES | COURSE CODE | COURSE TITLE | CREDIT | HOUR |
|---|---|---|---|---|
| COMPLEMENTARY COURSE | IVCUNYS-530 | न्यायशास्त्रीयप्रमाणपरिचयः | 4 | 4 |

*****************

# SYLLABUS – पाठ्यक्रमः

## SEMESTER- I – प्रथमं षाण्मासिकम्

### IBUNYM-521- न्यायवैशेषिकदर्शनेतिहासः

**भारः- 24**

**उपलब्धिः- २**

**उद्देश्यानि**

१.भारतीयदर्शनेतिहासस्य सामान्यपरिचयः ।
२.न्यायदर्शनेतिहासस्य विशेषपरिचयः।
३.वैशेषिकदर्शनेतिहासस्य विशेषपरिचयः ।
४.न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रत्वावगमः ।

विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | दर्शनशब्दस्य व्युत्पत्तिः, संस्कृतवाङ्मये तस्य प्राधान्यम्, दर्शनप्रवर्तकानां सामान्यपरिचयश्च। |
| द्वितीयः अंशः | न्यायशब्दस्य व्युत्पत्तिः, न्यायदर्शनस्य महत्त्वम्, न्यायसूत्र-भाष्य-वार्तिककाराणां परिचयः, प्राचीननवीनभेदः, नव्यन्यायेतिहासश्च । |
| तृतीयः अंशः | वैशेषिकदर्शनस्य परिचयः, वैशेषिकसूत्र-भाष्यकाराणां परिचयः, प्रसिद्धग्रन्थकर्तृणां परिचयश्च । |
| चतुर्थःअंशः | न्यायवैशेषिकयोः समानतन्त्रत्वनिरूपणम्, प्रकरणग्रन्थकर्तृणां परिचयश्च। |

| क्रम संख्या | **अध्ययनप्रयोजनानि** | **प्र.प्र.** | **प्र.वि.प्र.** | **धा** | **अ. स्व** | **कक्ष्यासमयः** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | भारतीयदर्शनस्य स्वरूपावगमः। | १ | ३ | ज्ञा | परि | ६ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | आस्तिकदर्शनेषु न्यायशास्त्रस्य वैशिष्ट्यावागमः। | १ | ३ | ज्ञा | परि | ४ |
| ३ | न्यायशास्त्रोत्पत्तिविकासयोः विशिष्टं ज्ञानम् | १ | ३ | ज्ञा | परि | १० |
| ४ | वैशेषिकदर्शनस्य सामान्यपरिज्ञानं, उत्पत्तिविकासयोः अधिगमः। | १ | ३ | ज्ञा | परि | ३ |
| ५५५ | न्यायवैशेषिकदर्शनप्रतिपाद्यपदार्थानां विशेषावगतिः। | १ | ३ | ज्ञा | परि | ५ |

**पाठ्यग्रन्थः-**

- **दर्शनशास्त्रस्येतिहासः,** डा. शशिबाला गौडः, चौखाम्बा सुरभारती प्रकाशनम्, 2012

**अवलोकनीयग्रन्थाः-**

- **A History of Indian Logic,** Satishchandra Vidyabhushan, Motilal Banarasidass Publishers, 2019
- **The History and Bibliography of Nyaya-Vaisesika Literature,** Gopinatha Kaviraja, Sampurnanand Sanskrit University, 1982

# COMPLIMENTARY COURSE

## ICUNYM-522 तर्कसंग्रहः - प्रमेयभागः

**भारः- २४**
**उपलब्धिः-२**

**उद्देश्यानि**

१.भारतीयन्यायवैशेषिकशास्त्रविज्ञानस्य सामान्यावगाहः।
२.वैशेषिकशास्त्रमनुसृत्य प्रमेयानां तत्सिद्धान्तानाम् च सामान्यत:अवगम:।
३.वैशेषिकरीत्या पदार्थलक्षणस्य स्वरूपस्य च अवगम:।
४. प्रमेयपरिशीलनप्रक्रियायाः अवधारणम्।

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | भारतीयन्यायवैशेषिकशास्त्रस्य तर्कसंग्रहस्य च सामान्यपरिचयः, पदार्थविभागपरिचयः च। |
| द्वितीयः अंशः | पदार्थस्वरूपस्य , तद्भेदानाञ्चावधारणम्। |
| तृतीयः अंशः | द्रव्याणां लक्षणत: विशेषविभागत:च अवधारणम्। |
| चतुर्थ अंशः | गुणानांलक्षणत: विशेषविभागत: च अवधारणम्। |
| पञ्चम अंशः | इतरपदार्थानाम् स्वरूपत: विशेषत: अवधारणम्। |

| क्रम संख्या | अध्ययनप्रयोजनानि | **प्र. प्र** | **प्र.वि.प्र .** | **धा** | **अ. स्व** | **क क्ष्या समयः** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | भारतीयन्यायवैशेषिकशास्त्रस्य सामान्यपरिचयः। | १ | ४ | जा | परि | ३ |
| २ | सामान्यत:पदार्थोद्देश्यस्य अवगमः। | १ | ४ | जा | परि | ३ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | द्रव्याणां लक्षण-विभाग पुरस्सरं अवगमः। | १ | ४,८ | जा | परि | ६ |
| ४ | गुणानां लक्षण-विभाग पुरस्सरं अवगमः। | १ | ४, ८ | जा | परि | ६ |
| ५ | अवशिष्टपदार्थस्वरूपस्य अवगमः। | १ | ४, ८ | जा | परि | ६ |

**पाठ्यग्रन्थः-**

१.तर्कसंग्रहः - श्रीमदन्नंभट्टः।

**अवलोकनीयाः ग्रन्थाः-**

१.तर्कसंग्रह-अन्नंभट्ट (English Translation with notes) वि.एन्.झा

२. ए.हिस्टरी ओफ् इण्डेन् फिलोसफि- एम् हिरियन्ना।

३.न्यायामृतम्- जगदीशभट्टाचार्यः।

# SEMESTER- II – द्वितीयं षाण्मासिकम्

## Core Course

## IIB UNYS-523-न्यायसूत्रम्– प्रथमाध्यायः

**भारः-24**

**उपलब्धिः-२**

**उद्देश्यानि**

- सामान्यतः न्यायदर्शनस्य परिचयः |
- न्याये प्रमाणतत्त्वस्य  अवगमः |
- न्याये प्रमेयतत्त्वस्य अवगमः।
- विचारप्रक्रियायाः वादप्रक्रियायाः च अवगमद्वारा विचारशीलतासंपादनम् |

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | सामान्यतः न्यायदर्शनस्य पदार्थानां च परिचयः। |
| द्वितीयः अंशः | प्रमाणानां समुचितः अवगमः । |
| तृतीयः अंशः | प्रमेयानां समुचितः अवगमः। |
| चतुर्थः अंशः | वादप्रक्रियायाः अपेक्षितानाम् अंशानाम् अवगमः। |

| क्रम संख्या | **अध्ययनप्रयोजनानि** | **प्र.प्र** | **प्र.वि.प्र** | **धा** | **अ.स्व** | **कक्ष्या समयः** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | सामान्यतः न्यायसूत्रस्य व्याख्यानानां च परिचयः। | १ | ४ | ज्ञा | परि | ५ |
| २ | पदार्थानां परिचयः, प्रयोजनस्य अवगमः च । | १ | ४ | ज्ञा | परि | ४ |
| ३ | प्रमाणानां स्वरूपस्य प्रक्रियायाश्च अवगमः। | १,३ | ४ | ज्ञा | परि | ५ |
| ४ | प्रमेयानां स्वरूपस्य अवगमः। | १ | ४ | ज्ञा | परि | ४ |
| ५ | संशयादिपदार्थानां स्वरूपावगमः, हेत्वाभासानां परिचयश्च । | १,४ | ४,६ | ज्ञा | परि | ३ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | वादस्वरूपं तत्प्रभेदानाञ्च अवगमः। | १,४ | ४,७ | ज्ञा | परि | ३ |
| ७ | शास्त्रविचारप्रक्रियायाःअवगम: प्रयोगकुशलतासंपादनञ्च। | १,४ | ४,७ | ज्ञा, अप | परि | ४ |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

- न्यायसूत्रम्  वात्स्यायनमुनिप्रणीतं न्यायभाष्यसहितं – १&२ अध्यायौ, पण्डित श्री सुदर्शनाचार्यकृत प्रसन्नपदव्याख्यया संवलितम्, संपादकः - स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, सुधी प्राकशनम् , वाराणसी,१९८६.

**अवलोक्याः ग्रन्थाः**

- न्यायदर्शनम्-मलयालम्- टि,आर्यादेवी,पञ्चाङ्गं,ओफ्सेट् प्रिन्ट्,कुन्नंकुलं,त्रिशूर्-२०१४
- Nyaya Bhashyam(Eng) - S C Vidyabhooshan
- History of Indian Logic – S C विद्याभूषण:

## SEMESTER- III – तृतीयं षाण्मासिकम्

## COMPLIMENTARY CORE COURSE

### IIICUYNM-525 तर्कसंग्रहदीपिका - I (प्रत्यक्षखण्ड:)

**भारः - 24**

**उपलब्धिः - 2**

**उद्देश्यानि|**

- संस्कृते व्याख्यानप्रक्रियायाः सामान्यावगमः
- न्यायवैशेषिके पदार्थनिरूपणप्रक्रियायाः सामान्यावगमः
- वैशेषिकपदार्थानाम् विमर्शपूर्वकनिरूपणद्वारा पठनप्रक्रियायाः अवगमः
- प्रत्यक्षप्रमाणस्य प्रक्रियायाः भेदानां च अवगमः

**विषयविभागः|**

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | पदार्थानाम् उद्देशविभागनिरूपणम् |
| द्वितीयः अंशः | नवानां द्रव्याणां निरूपणम् |
| तृतीयः अंशः | गुणानां निरूपणम् \| |
| चतुर्थः अंशः | ज्ञानभेदानां, प्रत्यक्षप्रमाणस्य च निरूपणम् |

| क्रमसंख्या | **अध्ययनप्रयोजनानि** | प्र.प्र. | प्र.वि.प्र. | धा | अ.स्व. | समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वैशेषिकशास्त्रे पदार्थनिरूपण-प्रक्रियायाः सामान्यतः अवगमः | 1 | 4, 6 | स्म,जा | परि | 3 |
| 2. | पदार्थानाम् उद्देशस्य विभागस्य च विमर्शपूर्वक: अवगम: | 1 | 4,6 | स्म,जा | परि | 3 |
| 3. | द्रव्य-लक्षण-निरूपणं, पठनं च | 1 | 4, 8 | जा | परि | 5 |
| 4. | गुणानां लक्षणं निरूपणं च | 1 | 4, 8 | जा | परि | 5 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |
| 5. | सामान्यतः प्रमाणानाम् अवगमः | 1 | 4 | जा | परि | 4 |
| 6. | प्रत्यक्षप्रमाणस्य तद्विभागस्य च अवगमः | 1 | 4, 6 | जा | परि | 4 |

**पाठ्यग्रन्थः**

- तर्कसंग्रहदीपिका (प्रत्यक्षखण्डः),चौखम्बा संस्कृत सीरीस्, वाराणसी

**अपेक्षणीयाः सहायकग्रन्थाः**

- तर्कसंग्रहदीपिका (बालप्रियासहितः), डा. एन्.एस्.आर्.ताताचार्यः, ed. डा.एन्. वीळिनाथन्, चेन्नै, 2008.
- Tarkasangraha (Engtranslationwithnotes), Dr VN Jha, Chinmaya International foundation,Ernakulam)
- Tarkasangrahadipika (mal), Dr. T. Aryadevi, Kerala Sahitya Academy, Thrissur, 2009.

# SEMESTER- IV – चतुर्थं षाण्मासिकम्

## Complementary Course

## IVUNYS-526 कारिकावली ( प्रत्यक्षखण्डम्)

(न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रप्रकरणग्रन्थः)

**भारः- 24**

**उपलब्धिः - ३**

**उद्देश्यानि**

- न्यायवैशेषिकदर्शनयोः पदार्थानां परिचयः
- ईश्वरसाधकप्रकारावगमः
- वैशेषिकदर्शने पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्यज्ञानम्
- कारणलक्षणावगमः
- द्रव्याणां परिचयः
- वैशेषिकानां परमाणुसिद्धान्तस्य अवगमः
- विभिन्नदर्शनेषु आत्मस्वरूपावगतिः
- प्रत्यक्षप्रमाणावगतिः

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| **प्रथमः अंशः** | ईश्वरनिरूपणम्, मङ्गलवादः,पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्य प्रकरणम् |
| **द्वितीयः अंशः** | कारणस्वरूपं तद्भेदाश्च |
| **तृतीयः अंशः** | द्रव्यनिरूपणम् आत्मनिरूपणञ्च |
| **चतुर्थःअंशः** | प्रत्यक्षप्रमालक्षणविचारः,तत्प्रभेदविचारः,लौकिकालौकिक-सन्निकर्षविचारश्च |

| क्रम संख्या | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्र. | प्र.वि. प्र. | धा | अ.स्व | कक्ष्यास मयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | न्यायवैशेषिकदर्शनयोः सामान्यपरिचयः | १ | ४ | ज्ञा | परि | ६ |
| २ | वैशेषिकदर्शने पदार्थानां साधर्म्यवैधर्म्यज्ञानम् | १,४ | ४,६,८ | ज्ञा | परि आनु | ८ |
| ३ | द्रव्याणां प्रत्येकं लक्षणप्रकाराभ्यां सम्यग्विज्ञानम् | १,४ | ४,६,७ | ज्ञा | परि | ६ |
| ४ | आत्मतत्त्वस्य विशिष्टावगतिः | १,४ | ४,६ | ज्ञा | परि आनु | ४ |
| ६ | प्रत्यक्षप्रमाणस्य सम्यगवगतिः | १,४ | ४,६ | ज्ञा, अप | परि | ४ |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

- कारिकावली -प्रत्यक्षखण्डम्- श्री विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यः

**अवलोकनीयाग्रन्थाः-**

- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- दिनकरी रामरुद्री व्याख्या
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली -प्रत्यक्षखण्डम्- श्री विश्वनाथपञ्चाननभट्टाचार्यः,प्रत्यक्षखण्डान्तं 'बालप्रिया' हिन्दी व्याख्याऽग्रे च 'आलोक' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहिता,व्याख्याकारौ डा.गजाननशास्त्री मुसलगावकर् आचार्य लोकममि दाहाल्,चौखम्बा सुरबारती प्रकाशन्,वाराणसी.
- मुक्तावलीसारः मलयालम्,डा.टी.आर्यादेवी,एस्.एस्.यु.एस् पब्लिकेशन्स्,कालटी.

## SEMESTER- V – पञ्चमं षाण्मासिकम्

## Core Courses

## Core Course 1

## VBUNYM-527 - TARKABHASHA – तर्कभाषा

### Credits - उपलब्धिः - 4

**Course Objectives - उद्देश्यानि**

- न्यायशास्त्रस्य शास्त्रप्रक्रियायाः च सामान्यतयापरिचयः
- प्रमाणपदार्थस्य समुचितः अवगमः
- प्रमेयपदार्थस्य समुचितः अवगमः
- गुणादिप्रमेयाणाम् अवगमः

### विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | भारतीयदर्शने न्यायदर्शनप्राधान्यस्य विषयाणां च अवगमः |
| द्वितीयः अंशः | न्यायनयेन प्रमाणानाम् अवगमः |
| तृतीयः अंशः | न्यायनयेन प्रमेयाणाम् अवगमः |
| चतुर्थः अंशः | न्यायवैशेषिकनयेन गुणादीनाम् अवगमः |

| | **अध्ययनप्रयोजनानि** | **प्र.प्रयो** | **प्र.वि.प्रयो.** | **धा** | **ज्ञा.ग.** | **कक्ष्यासमयः** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | दर्शनशब्दस्य परिचयः भारतीयदर्शन स्य सामान्यतः विभागानां च अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 6 |
| CO 2 | न्यायशास्त्रस्यसामान्यतत्त्वानां, प्रकरणग्रन्थानां स्वभावस्य,शास्त्रप्रवृत्तेः च अवगमः । | PO1 | PSO 4, 6 | ज्ञा | परि | 6 |
| CO 3 | न्यायसिद्धान्ताभिमतयोः प्रत्यक्षानुमानप्रमाणयोः अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 4 | न्यायसिद्धान्ताभिमतयोः उपमानागमप्रमाणयोः अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 5 | न्यायाभिमतप्रमेयानां सामान्यतया अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 6 | द्रव्याणां लक्षणसमन्वयस्य विभागस्य च अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 7 | गुणादीनां लक्षणसमन्वयस्य विभागस्य च अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 8 | संशयादीनां स्वरूपस्य विभागस्य च अवगमः । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 6 |

**प्रधानतयापाठ्यग्रन्थः**

- तर्कभाषा– केशवमिश्रविरचितः

**अवलोक्या ग्रन्थाः**

- न्यायसूत्रं – गौतमस्य
- History of Indian Logic

# Core Course 2

## VBUNYM-528 - Syncretic Nyaya Vaiseshika

## न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रप्रकरणग्रन्थः

### Credits - उपलब्धिः - 4

### Course Objectives – उद्देश्यानि

- न्यायवैशेषिकदर्शनयोः पदार्थपरिचयः।
- ईश्वरसाधकप्रकारावगमः।
- विभिन्नदर्शनेषु आत्मस्वरूपावगतिः।
- कारणलक्षणावगमः।
- प्रत्यक्षप्रमाणावगतिः।
- परमाणुसाधनप्रकारावगमः।

### विषयविभागः

| | |
|---|---|
| **प्रथमः अंशः** | ईश्वरनिरूपणम्, मङ्गलवादः,पदार्थसामान्यपरिचयः |
| **द्वितीयः अंशः** | पृथिव्यादिद्रव्यनिरूपणम् |
| **तृतीयः अंशः** | द्रव्यनिरूपणं, आत्मनिरूपणं, तत्र मतभेदविचारश्च |
| **चतुर्थः अंशः** | प्रत्यक्षप्रमाणलक्षणविचारः,तद्प्रभेदविचारः, तत्कारणलौकिकालौकिकसन्निकर्षविचारश्च। |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | न्यायवैशेषिकदर्शनयोः सामान्यपरिचयः। | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | | 8 |
| CO2 | पदार्थानां सामान्यज्ञानसम्पादनम्। | PO 1 | PSO 4,6,8 | ज्ञा | | 9 |
| CO3 | द्रव्याणां विशिष्टावगतिः | PO 1, 4 | PSO 4, 6, 7 | ज्ञा | | 12 |
| CO4 | आत्मस्वरूपस्य विशिष्टावगतिः | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा | | 12 |
| CO5 | आत्मस्वरूपविषये मतभेदस्य परिचयात्मकं ज्ञानम् | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञाअप | | 9 |
| CO6 | प्रत्यक्षप्रमाणस्य तत्प्रभेदसहितं विशिष्टावगमः | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा, अप | | 10 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली –किरणावली व्याख्या प्रत्यक्षखण्डान्तो भागः

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- दिनकरी-रामरुद्री-व्याख्यासहिता

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – बालप्रियाव्याख्यासहिता (प्रत्यक्षखण्ड:)

# Core Course 3 -

## VBUNYM-529 - TARKASANGRAHADIPIKA – II

## तर्कसङ्ग्रहदीपिका – अनुमानखण्डादारभ्य ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्ता

## Credits - उपलब्धिः - 4

### Course Objectives - उद्देश्यानि

- न्यायशास्त्रप्रक्रियायाः सामान्यतया परिचयः
- अनुमानप्रमाणस्य समुचितः अवगमः
- उपमानशब्दप्रमाणयोः समुचितः अवगमः
- प्रामाण्याप्रामाण्ययोः स्वरूपावगतिः
- न्यायदर्शनस्थप्रमाणतत्त्वानां आधुनिककाले उपयोगावगतिः

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | अनुमानखण्डः |
| द्वितीयः अंशः | उपमानशब्दखण्डौ |
| तृतीयः अंशः | अयथार्थज्ञानप्रभृत्यभावप्रकरणान्तो भागः |
| चतुर्थः अंशः | पदार्थतत्त्वज्ञानस्य निःश्रेयसहेतुत्वप्रकारः |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्यासमयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | अनुमानप्रक्रियायाः सामान्यपरिचयः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 6 |
| CO 2 | सद्धेत्वसद्धेत्वोः परिशीलनात्मकं विशिष्टज्ञानम्। | PO1 | PSO 4, 6 | ज्ञा | परि | 6 |
| CO 3 | शाब्दबोधप्रक्रियायाः अवगतिः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 4 | प्रमाणान्तराणां चतुर्षु प्रमाणेष्वन्तर्भावज्ञानद्वारा प्रमाणां स्वरूपस्य विशेषावगतिः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 5 | प्रामाण्याप्रामाण्यस्वरूपयोः परिज्ञानम् । | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 6 | न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समानतन्त्रत्वावगतिः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 7 | तत्त्वज्ञानस्य मोक्षहेतुत्वावगतिः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 8 | आधुनिककाले न्यायदर्शनस्थप्रमाणानां प्रभावावगतिः। | PO1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 6 |

**प्रधानतयापाठ्यग्रन्थः**

तर्कसङ्ग्रहदीपिका – अनुमानखण्डादारभ्य ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्तो भागः

**अवलोक्या ग्रन्थाः**

- न्यायसूत्रं – गौतमस्य
- तर्कभाषा– केशवमिश्रः (चिताः भागाः)
- History of Indian Logic

# Core Course 4

## VBUNYM-530 - Study of Multi-faceted Dimensions of Indian Logic

## भारतीयतर्कशास्त्रस्य बहुमुखतापरिचयः

**Credits - उपलब्धिः - 4**

**Course Objectives – उद्देश्यानि**

- भारतीयदर्शनेषु न्यायदर्शनस्य प्रभावविज्ञानम्।
- बौद्धानुसारिप्राचीनन्यायदर्शनविकासस्य परिज्ञानम्।
- बौद्धदर्शनस्य उत्पत्तिविकासयोः , बौद्धतर्कस्य च परिज्ञानम्।
- जैनदर्शनस्य उत्पत्तिविकासयोः जैनतर्कस्य च परिज्ञानम्।
- आधुनिककाले दर्शनपरिज्ञानस्य प्रयोजनम्।
- नव्यन्यायस्य उत्पत्तिविकासयोः ज्ञानम्।

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| **प्रथमः अंशः** | प्राचीनन्यायस्य कालानुसारिविकसनम् |
| **द्वितीयः अंशः** | बौद्धन्यायस्य उद्भवः विकासश्च |
| **तृतीयः अंशः** | जैनन्यायस्य उद्भवः विकासश्च |
| **चतुर्थःअंशः** | नव्यन्यायस्य उद्भवः विकासश्च, आधुनिककाले तस्य प्रभावश्च |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | सामान्यतः भारतीयदर्शनानां परिचयः। | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | | 9 |
| CO2 | प्राचीनन्यायदर्शनविकासस्य परिचयः। | PO 1 | PSO 4,6, | ज्ञा | | 9 |
| CO3 | बौद्धदर्शनेतिहासस्य तद्गतमतभेदस्य च परिचयः। | PO 1, 4 | PSO 4, 6, 7 | ज्ञा | | 12 |
| CO4 | बौद्धदर्शनस्थानां तत्त्वानामवगतिः, क्षणिकत्वसाधकयुक्तीनामवगतिश्च। | PO 1, 4 | PSO 4,8 | ज्ञा | | 10 |
| CO5 | जैनदर्शनस्य परिचयः, तद्गततत्त्वानामवगतिश्च। | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा | | 10 |
| CO6 | नव्यन्यायशास्त्रस्योत्पत्तिविकासपरिज्ञानम्। आधुनिककाले न्यायदर्शनस्य प्रभावस्यावगतिश्च। | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा, | | 10 |

**प्रधानपाठ्यग्रन्थः**

सर्वदर्शनसङ्ग्रहः सायनमाधवाचार्यविरचितः

**सहायकग्रन्थाः-**

1. ए.हिस्टरि ओफ् इन्ड्यन् लोजिक्-एस्.सि.विध्याभूषण
2. भारतीयचिन्ता-के.दामोदरन्
3. ए.हिस्टरि ओफ्.इन्ड्यन् फिलोसफि-एस्.एन्.दास्गुप्त।
4. एन्सैक्लोपीडिया ओफ् इन्ड्यन् फिलोसफि- काल्.एच्.पोर्टर्

# Core Course 5

## VBUNYM-531 - Informatics

**Credits - 4**

**Course Objectives**

- Update and expand basic informative skills and attitudes relevant to the emerging knowledge society
- Gain skill to use digital knowledge resources in learning

**Unitwise Distribution**

| | |
|---|---|
| Unit 1 | Overview of Information Technology |
| Unit 2 | Social Informatics and IT Application |
| Unit 3 | National Language Processing |
| Unit 4 | Gain awareness of Digital sources of Sanskrit and Nyaya Texts |

| | Course Outcomes | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्र | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्यासमयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | Understand the Fundamentals of Information and Communication Technology Skills and Applications. | PO1, 6 | PSO 5 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO2 | Understand the Sources and use of Digital Resources. | PO1, 6 | PSO 5 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO3 | Understand the Fundamentals of Social Informatics. | PO1, 6 | PSO 5, 7 | ज्ञा | परि | 7 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO4 | Understand the Information and Communication Technology for Sanskrit Language. | PO1, 6 | PSO 5 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO5 | Understand the Language Computing and Language Technology. | PO1, 6 | PSO 5 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO6 | Understand the Digital Sources of Knowledge on Sanskrit and Indology. | PO1, 6 | PSO 5 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO7 | Understand the Processing of Sanskrit in Computers. | PO1, 6 | PSO 5, 7 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO8 | Understand the Fundamentals of Developmental Informatics. | PO1, 6 | PSO 5, 7 | ज्ञा | परि | 7 |

**Essential Text Book**

- Informatics Technology in Action, Alan Evans, LeslieLamport, Dolores Etter, Darron George

**Additional texts**

- Nyayasutras,
- The Logic of Udyotakara, File Format PDF/Adobe Acrobat view as HTML
- The formal content of Trairupya doctrine, www.Logic.glashaff.net
- Personal 2 stthomas.edn/dkromen/udyotakara.html.

# Open Course 1

## VDUNYM532 - Sabdabodha theories

## शाब्दबोधविचाराः

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

- सामान्यतः शब्दप्रमाणस्य परिचयः
- पदात् वाक्यात् च अर्थावबोधप्रकाराणाम् अवगमः
- शब्दात् अर्थबोधे बहुविधसिद्धान्तानां परिशीलनं
- शाब्दबोधप्रक्रियायाः अवगमः, प्रयोगकरणं च

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | शब्दप्रमाणस्य सामान्यः परिचयः |
| द्वितीयः अंशः | पदवृत्त्योः अवगमः |
| तृतीयः अंशः | वाक्यार्थज्ञानकारणानाम् अवगमः |
| चतुर्थः अंशः | शाब्दबोधवर्णनप्रक्रियायाः अवगमः, प्रयोगपरिशीलनं च |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | शब्दप्रमाणे करणव्यापा रफलानाम् अवगमः प्रक्रियायाः अवगमः च | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 2 | पदशक्तेः स्वरूपस्य अवगमः | PO 1 | PSO 4, 7 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 3 | शक्तिग्रहे उपायानां च अवगमः | PO 1, | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 4 | चतुर्विधानां पदभेदानाम् अवगमः | PO 1, | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 5 | लक्षणावृत्तेः अवगमः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 6 | वाक्यार्थज्ञानहेतूनाम् अवगमः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 7 | शाब्दबोधप्रक्रियायाः अवगमः, प्रयोगपरिशीलनं च | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 8 | मतान्तरे शाब्दबोधप्रक्रियायाः परिचयः परिशीलनप्रकारस्य अवगमः च | PO 1 | PSO 4, 7 | ज्ञा, अप | परि | 10 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

- तर्कसंग्रहदीपिकायां शब्दखण्डः
- तर्कसङ्ग्रहस्य आलोकव्याख्या - नव्यमङ्गलवरदाचार्यविरचिता

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

- शाब्दबोधविचारः – राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानं, न्यू देल्हि
- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – शब्दखण्डः

# OPEN COURSE 2

## VDUNYM-533 - न्यायवैशेषिकयोः मौलिकाध्ययनम्

## Fundamental study of Nyaya and Vaiseshika

### Credits - उपलब्धिः - 4

### Course Objectives – उद्देश्यानि

1. आस्तिकदर्शनानां सामान्यावगमः ।
2. आस्तिकदर्शनेषु न्यायशास्त्रस्य प्राधान्यम्, उत्पत्तिविकासश्च।
3. वैशेषिकदर्शनस्य सामान्यपरिज्ञानं, उत्पत्तिविकासश्च।
4. न्यायदर्शने पदार्थानाम् अवगमः।
5. वैशेषिकदर्शने पदार्थानाम् अवगमः।
6. न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समकालीनप्राधान्यावगतिः।

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| **प्रथमः अंशः** | आस्तिकदर्शनानां सामान्यावगमः, तेषु न्यायशास्त्रस्य प्राधान्यम् उत्पत्तिः, विकासश्च। |
| **द्वितीयः अंशः** | न्यायदर्शनस्य सामान्यपरिज्ञानम्, पदार्थविचारश्च। |
| **तृतीयः अंशः** | वैशेषिकदर्शनस्य उत्पत्तिः विकासश्च, पदार्थविचारः च। |
| **चतुर्थःअंशः** | न्यायवैशेषिकयोः समकालीनप्रसक्तिः। |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | आस्तिकदर्शनानां सामान्यावगमः | PO1 | PSO3 | U ज्ञा | C परि | 12 |
| CO2 | आस्तिकदर्शनेषु न्यायशास्त्रस्य प्राधान्यम्, उत्पत्तिः, विकासश्च। | PO1 | PSO3 | U ज्ञा | C परि | 8 |
| CO3 | वैशेषिकदर्शनस्य सामान्यपरिज्ञानं, उत्पत्तिविकासयोः परिज्ञानम् | PO1 | PSO3 | U ज्ञा | C, परि | 6 |
| CO4 | न्यायदर्शने प्रमाणानाम् अवगमः। | PO1 | PSO3 | U ज्ञा | C, परि | 14 |
| CO5 | वैशेषिकदर्शने पदार्थानाम् अवगमः। | PO1 | PSO3 | U ज्ञा | C, परि | 14 |
| CO6 | न्यायवैशेषिकदर्शनयोः समकालीनप्राधान्यावगतिः। | PO1 | PSO3 | An अप | P आनु | 6 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

तर्कसङ्ग्रहदीपिका

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

1. भारतीयचिन्ता-के.दामोदरन्
2. ए.हिस्टरि ओफ्.इन्ड्यन् फिलोसफि-एस्.एन्.दास्गुप्ता।
3. एन्सैक्लोपीडिया ओफ् इन्ड्यन् फिलोसफि- काल्.एच्.पोर्टर्।

OPEN COURSE- 3

VDUNYM-534 - Indian Philosophical Systems

भारतीयदर्शनप्रणालिका

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

- सामान्यतः भारतीयदर्शनानां परिचयः
- भारतीयदार्शनिकप्रमुखसिद्धान्तानाम् अवगमः
- व्यक्तिपरिपोषणे सामूहिकजीवने च दर्शनानाम् उपयोगस्य अवगमः

**विषयविभागः**

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | सामान्यतः भारतीयदर्शनानां परिचयः |
| द्वितीयः अंशः | आस्तिकदर्शनानां परिचयः |
| तृतीयः अंशः | नास्तिकदर्शनानां परिचयः |
| चतुर्थः अंशः | दर्शनानां प्रयोगपद्धतेः अवगमद्वारा जीवने उपयोक्तुं परिशीलनम् |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | भारतीयदर्शनानां सामान्यपरिचयसंपादनम् | PO 1 | PSO 1 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 2 | वैदिकसाहित्ये दर्शनचिन्तापद्धतेः अवगमः | PO 1 | PSO 1 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 3 | सांख्ययोगयोः परिचयः, प्रमुखसिद्धान्तानाम् अवगमः च | PO 1, | PSO 1 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 4 | न्यायवैशेषिकयोः परिचयः, प्रमुखसिद्धान्तानाम् अवगमः च | PO 1, | PSO 1, 8 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 5 | पूर्वोत्तरमीमांसयोः परिचयः, प्रमुखसिद्धान्तानाम् अवगमः च | PO 1 | PSO 1 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 6 | चार्वाकबौद्धजैनदर्शनानां परिचयः, प्रमुखसिद्धान्तानाम् अवगमः च | PO | PSO 1 | ज्ञा | परि | 8 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | | | | |
| CO 7 | प्रायोगिकवेदान्तपरिचयद्वारा न्यायद्वारा च मानुषजीवने दर्शनानाम् उपयोगस्य अवगमः | PO 1, 6 | PSO 1, 9 | ज्ञा, प्र यो | परि आनु | 8 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

हरिभद्रसूरिविरचितः षड्दर्शनसङ्ग्रहः

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

- Indian Philosophy – Dr S Radhakrishnan
- History of Indian Philosophy – Das Gupta
- Outlines of Indian Philosophy – M Hiriyanna
- Six systems of Indian Philosophy – Max Muller
- Bharateeyadarsanangal – CV Vasudeva Bhattatiri
- Studies in Philosophy – Gopinath Bhattacharya

## Semester VI

## Core Course 1

### VIBUNYS535 - : NYAYA SUTRA WITH NYAYABHASHYA – I & II

### न्यायसूत्रं – न्यायभाष्ययुतं – I & II अध्यायौ

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

- सामान्यतः न्यायदर्शनस्य परिचयः |
- न्याये प्रमाणतत्त्वस्य प्रमेयतत्वस्य च अवगमः |
- विचारप्रक्रियायाः वादप्रक्रियायाः च अवगमद्वारा विचारशीलतासंपादनम्|
- वादे शोधप्रक्रियायां च कुशलतासंपादनम्, आविष्कारनैपुणसंपादनम् च |

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | सामान्यतः न्यायदर्शनस्य पदार्थानां च परिचयः |
| द्वितीयः अंशः | प्रमाणानां प्रमेयानां च समुचितः अवगमः |
| तृतीयः अंशः | वादप्रक्रियायाः अपेक्षितानाम् अम्शानाम् अवगमः |
| चतुर्थः अंशः | परीक्षाप्रक्रियायाः अवगमद्वारा विचारशीलतासंपादनं |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | सामान्यतः न्यायसूत्रस्य व्याख्यानानां च परिचयः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 2 | पदार्थानां परिचयः, प्रयोजनस्य अवगमः च | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 3 | प्रमाणानाम् स्वरूपस्य प्रक्रियायाः च अवगमः | PO 1, 3 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 4 | प्रमेयानाम् स्वरूपस्य अवगमः | PO 1, | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 5 | संशयादिपदार्थानां स्वरूपावगमः, वादे विषयाविष्कारप्रक्रियायाः अवगमः च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 6 | प्रमाणपरीक्षाप्रक्रियायाः अवगमः | PO 1, 4 | PSO 4, 7 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 7 | शास्त्रविचारप्रक्रियायाः अवगमः विचारप्रक्रियायाः प्रयोगकुशलतासंपादनं च | PO 1, 4 | PSO 4, 7 | ज्ञा, अप | परि | 8 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

न्यायदर्शनं न्यायभाष्यसहितं – 1&2 अध्यायौ

**अवलोक्याः ग्रन्थाः**

न्यायसूत्रवृत्तिः – विश्वनाथपञ्चाननः

न्यायभाष्यदर्पणं – सुदर्शनसूरी

Nyaya Bhashyam(Eng) - S C Vidyabhooshan

History of Indian Logic – S C विद्याभूषण:

## Core Course 2

### VIBUNYS-536 - Preliminaries of Vaiseshika

## वैशेषिकदर्शनस्य प्रकरणग्रन्थः – प्रशस्तपादभाष्यम्

### Credits - उपलब्धिः - 4

### Course Objectives – उद्देश्यानि

- सामान्यतः वैशेषिकशास्त्रे प्रतिपादितानां पदार्थानां सामान्यपरिचयः।
- नवद्रव्याणां अवधारणं,तेषां प्रत्येकलक्षणान्नां च अवगमः।
- चतुर्विंशति गुणानां ,तेषां साधर्म्यं,तद्वत् तेषां लक्षणानां अवधारणसामर्थ्यम्।
- पृथिव्यादि चतुष्टयपरमाणूनां आकाशकालदिगात्ममनसां नित्यद्रव्याणां च अवगमः।

### विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | पदार्थानां सामान्यपरिचयः, साधर्म्यप्रकरणम्, नवद्रव्याणां लक्षणं, सृष्टिप्रक्रिया। |
| द्वितीयः अंशः | गुणानां साधर्म्यप्रकरणम्, तेषां प्रत्येकं लक्षणानि। |
| तृतीयः अंशः | वुद्धेर्भेदः,प्रमाणद्वैविध्यम्,हेत्वाभासप्रकरणम्। |
| चतुर्थःअंशः | कर्म-सामान्य-विशेष-समवायपदार्थानां प्रतिपादनम्। |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | सामान्यतःवैशेषिकदर्शनप्रक्रियायाः परिचयः \| | PO 1 | PSO 8 | ज्ञा | | 6 |
| CO 2 | पदार्थानां तथा द्रव्याणां च साधर्म्यस्य अवगमः \| | PO 1 | PSO 8 | ज्ञा | | 6 |
| CO 3 | परमाणुभ्यः सृष्टिप्रक्रियायाः अवगतिः | PO 1, 4 | PSO 8, 4 | ज्ञा | | 8 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 4 | वैशेषिकदर्शने प्रमाणविषयकनिश्चयः | PO 1, 4 | PSO 8 | ज्ञा | | 6 |
| CO 5 | वैशेषिकदर्शनरीत्या हेत्वाभासस्य स्वरूपावगतिः | PO 1, | PSO 8 | ज्ञा | | 8 |
| CO 6 | अप्रमायाः स्वरूपप्रभेदनिश्चयः | PO 1, 4 | PSO 4, 8 | ज्ञा | | 8 |
| CO 7 | पृथिव्यादिप्रत्येकपदार्थानां लक्षणज्ञानम् | PO 1, 4 | PSO 4, 8 | ज्ञा | | 10 |
| CO 8 | कर्म-सामान्य-विशेष-समवायानां मोक्षाणां स्वरूपावगतिः | PO 1, 4 | PSO 4, 8 | ज्ञा, अप | | 8 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

प्रशस्तपादभाष्यं न्यायकन्दलीसहितम्

**अवलोकनीयः ग्रन्थः**

वैशेषिकदर्शनम् उपस्कारसहितम्

# Core Course 3

## VIBUNYS-537 - Definition of Vyapti

## व्याप्तिलक्षणम्

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

- नव्यन्यायस्य सामान्यतः अवगमः, नव्यन्यायप्रक्रियाद्वारा आविष्कारसामर्थ्यस्य संपादनं च
- लक्षणसमन्वयप्रक्रियायाः परिशीलनप्रक्रियायाः च अवगमः
- नव्यन्यायप्रक्रियया लक्षणनिर्वचने, समन्वयकरणे च प्रयोगविज्ञानसंपादनम्
- व्याप्तिस्वरूपस्य व्याप्तिलक्षणपरिष्कारप्रकारस्य च अवगमः
- नव्यन्यायग्रन्थानां स्वयं पठने अवगमे च श्रद्धायाः पोषणम्

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | नव्यन्यायस्य सामान्यपरिचयः, अनुमानप्रमाणस्य सामान्यतः अवगमः, व्याप्तिस्वरूपस्य अवगमः च। |
| द्वितीयः अंशः | पञ्चलक्षण्यां व्याप्तेः प्रथमद्वितीयलक्षणयोः अवगमः, तयोः समन्वयप्रक्रियायाः अवगमः च। |
| तृतीयः अंशः | तृतीयचतुर्थलक्षणयोः समन्वयप्रक्रियायाः अवगमः। |
| चतुर्थः अंशः | पञ्चमलक्षणस्य अवगमः, लक्षणेषु दोषावगमः च। |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | सामान्यतः नव्यन्यायचरितस्य प्रक्रियायाः च परिचयः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 2 | अनुमानप्रमाणस्य व्याप्तिस्वरूपस्य च अवगमः, पञ्चलक्षणीप्रकरणस्य अवतरणप्रयोजनस्य अवगमः च | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 3 | प्रथमलक्षणस्य अवगमः, समन्वयप्रक्रिया च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा, प्रयो | परि | 6 |
| CO 4 | द्वितीयलक्षणस्य अवगमः, समन्वयप्रक्रिया च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा प्रयो | परि | 10 |
| CO 5 | तृतीयलक्षणस्य अवगमः, समन्वयप्रक्रिया च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा प्रयो | परि | 4 |
| CO 6 | चतुर्थलक्षणस्य अवगमः, समन्वयप्रक्रिया च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा प्रयो | परि | 8 |
| CO 7 | पञ्चमलक्षणस्य अवगमः, समन्वयप्रक्रिया च | PO 1, 4 | PSO 4, 6 | ज्ञा प्रयो | परि | 6 |
| CO 8 | पञ्चलक्षणेषु दोषा णां अवगमः, सिद्धान्तलक्षणस्य अवगमः च | PO 1, 4 | PSO | ज्ञा, प्रयो | परि | 6 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

- पञ्चलक्षणीप्रकरणम् – तत्वचिन्तामणिः दीधितिः च

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

- पञ्चलक्षणीप्रकरणम् – गादाधरी
- पञ्चलक्षणीप्रकरणम् – जागदीशी
- पूर्वपक्षव्याप्तिप्रकरणम् – मुक्तावली

# Core Course 4

## VIBUNYS-538 - Nyaya Theory of Meaning

## न्याये शब्दार्थसिद्धान्तः

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

- सामान्यतः शब्दप्रमाणस्य परिचयः
- शब्दात् अर्थाविबोधे न्यायसिद्धान्तानाम् अवगमः
- शब्दात् अर्थबोधे मतान्तरसिद्धान्तानाम् परिशीलनं
- शाब्दबोधप्रक्रियायाः अवगमः, प्रयोगकरणं च

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | शब्दप्रमाणस्य परिचयः |
| द्वितीयः अंशः | पदानाम् अर्थोपस्थितिप्रक्रियायाः अवगमः |
| तृतीयः अंशः | वाक्यार्थबोधप्रकाराणाम् अवगमः |
| चतुर्थः अंशः | वाक्यार्थबोधे विविधशास्त्रदृष्टीनाम् अवगमः, परिशीलनं च |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | शब्दप्रमाणस्य परिचयसंपादनम् | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 2 | पदशक्तिविषये सिद्धान्तानाम् अवगमः, परिशीलनप्रकारस्य अवगमः च | PO 1 | PSO 4, 7 | ज्ञा | परि | 10 |
| CO 3 | शक्तिग्रहे उपायानां च अवगमः | PO 1, | PSO 4 | ज्ञा | परि | 8 |
| CO 4 | चतुर्विधानां पदभेदानाम् अवगमः | PO 1, | PSO 4 | ज्ञा | परि | 5 |
| CO 5 | लक्षणावृत्तेः अवगमः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 5 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 6 | वाक्यार्थज्ञानहेतूनाम् अवगमः | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा | परि | 7 |
| CO 7 | शाब्दबोधप्रक्रियायाः अवगमः, प्रयोगपरिशीलनं च | PO 1 | PSO 4 | ज्ञा, प्रयो | परि आनु | 8 |
| CO 8 | मतान्तरे शाब्दबोधप्रक्रियायाः परिचयः परिशीलनप्रकारस्य अवगमः च | PO 1 | PSO 4, 7 | ज्ञा, अप | परि आनु | 10 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

- न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – शब्दखण्डः

**अवलोकनीया ग्रन्थाः**

- शाब्दबोधमीमांसा – राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानं, न्यू देल्हि
- न्यायभाष्यम्

# Core Course 5

# VIBUNYS-539 – Ecological aspects in Nyaya and Ayurveda

# पर्यावरणविज्ञानम्- न्याये आयुर्वेदे च

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

1. पर्यावरणबोधावगाहः।
2. वेद-आयुर्वेद- दर्शनेषु पर्यावरणविज्ञानं प्रतिसामान्यावबोधः।
3. न्यायवैशेषिकयोः पर्यावरणविज्ञानावगाहः।
4. पञ्चभूतानां सामान्यावगाहः।
5. वनस्पतिविज्ञानसंरक्षणावबोधः।
6. पर्यावरणावगतिः वृक्षायुर्वेदे।

## विषयविभागः

| | |
|---|---|
| **प्रथमः अंशः** | पर्यावरणविज्ञानं प्रति आमुखम्। प्राचीनदर्शनेषु वृक्षायुर्वेद परिस्थित्योः विविधदलानि। |
| **द्वितीयः अंशः** | न्याय-वैशेषिकयोः पर्यावरणांशाः। मानुषिकजीवने पञ्चभूतानां प्राधान्यम्। |
| **तृतीयः अंशः** | आयुर्वेदस्य सामान्यनिरीक्षणम्। आयुर्वेदस्य विविधशाखाः। वृक्षाणां पोषणं,तेषां संरक्षणानि च। |
| **चतुर्थःअंशः** | ग्रन्थपठनम्। बृहत्संहितायां वृक्षायुर्वेदे चिताः श्लोकाः। कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्– चिताः भागाः। तर्कसंग्रहे द्रव्यविभागः। |

| | अध्ययनप्रयोजनानि | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | पर्यावरणविज्ञानं प्रति आमुखम्। | PO 1 | PSO 3 | ज्ञा | | 8 |
| CO2 | प्राचीनदर्शनेषु वृक्षायुर्वेदे विविधतलानि। | PO 1 | PSO 7 | ज्ञा | | 4 |
| CO3 | मानुषिकजीवने पञ्चभूतानां प्राधान्यम्। | PO 1, 4 | PSO 4,5 | ज्ञा अप | | 4 |
| CO4 | न्यायवैशेषिकयोः पर्यावरणविज्ञानावगाहः। | PO 1, 4 | PSO 4,6, 8 | ज्ञा अप | | 8 |
| CO5 | आयुर्वेदस्य सामान्यपरिचयः। | PO 1 | PSO 1 | ज्ञा अप | | 8 |
| CO6 | आयुर्वेदस्य विविधशाखायाः परिज्ञानम्। | PO 1 | PSO 1,9 | ज्ञा, | | 8 |
| CO7 | बृहत्संहितायां वृक्षायुर्वेदप्रकरणस्यावगमः, प्रायोगिकपरिशीलनं च। | PO 1 | PSO 7,9 | ज्ञा | | 10 |
| CO8 | कौटिलीयार्थशास्त्रे पर्यवरणचिन्तस्य अवगमः | PO 1, 4 | PSO 9 | ज्ञा अप | | 10 |

## पाठ्यग्रन्थाः

1. बृहत्संहिता- वृक्षायुर्वेदः(चिताः श्लोकाः)
2. चरकसंहितायाः विमानस्थानस्य जनपदोद्ध्वंसः
3. तर्कसंग्रहः
4. अर्थशास्त्रं (चिताः भागाः)

## सहायकग्रन्थाः

Vrukshayurveda – Dr P V Ouseph.

Oushadhivarga in Amarakosa.

## VIBUNYS-540 - Project Course

**Credits - उपलब्धिः – 2**

# Choice Based Courses

## Course 1

## VIBUNYS-541 – Nyayasastra Tradition in Kerala

**Credits - उपलब्धिः - 4**

**Course Objectives – उद्देश्यानि**

1. Fundamentals of Nyaya-A study
2. Acquire the knowledge of Nyaya Tradition of Kerala
3. Understand the contributions of Tripunithura, Kodungallur and Payyubhattas traditions

**Unit-wise Distribution**

प्रथमांशः- Importance of Nyayasastra among Indian Philosophical Systems.

द्वितीयांशः- Kerala's contribution to Nyayasastra - A general approach

तृतीयांशः- A detailed study of the contributions of three major streams of Kerala tradition viz.,Trippunithura, Kodungallur and Payyurbhatta Family.

चतुर्थांशः- Introduction to Sastra tradition in Kerala

| | Course Outcomes | प्र.प्रयो | प्र. वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | Understand the Sastra tradition in Kerala | PO1 PSO3 | | U | C | 10 |
| CO2 | Enrich the knowledge of influence of Nyaya in other sastras | PO1 PSO3 PSO5 | | U | C | 10 |
| CO3 | Understand the contribution of Nyaya traditions of Kerala | PO1 PSO3 | | U | C | 10 |
| CO4 | View and analyse the Nyayasastra in ancient India | PO1 PSO3 | | U | C | 10 |
| CO5 | Knowledge of Navya Nyaya and its importance in modern philosophical study in India. | PO1 PSO3 | | R | C,P | 10 |
| CO6 | Technical knowledge about the Navya Nyaya especially in Kerala | PO1 PSO3 | | U | C,P | 10 |

## Core Reading

Tarkasara of Ananthanarayanasastri

### Reference Texts


1. A History of Indian Logic-Satish Chandra Vidyabhushana
2. Introduction of Subhodhini- Rama Varma Parikshit Thampuran
3. The Contribution of Sanskrit Literature- Kunjunni Raja.K, University of Madras 1980
4. Sanskrit Tradition of Tripunithura- C.M.Neelakantan, Ed by Kuruppu. KKM, Central Heritage Studies, Hill Palace, Tripunithura 2009.

# Course 2

# VIBUNYS-542 – Sankhyakarika

# सांख्यकारिका

## Credits - उपलब्धिः - 4

## Course Objectives – उद्देश्यानि

1. Knowledge of the tattvas propagated in Sankhya Philosophy
2. Acquire the knowledge of the Trigunas
3. Understand the theory of satkaryavada
4. Appreciate the contributions of Sankhya Philosophy in the Indian Knowledge Traditions

## Unit-wise Distribution

| | |
|---|---|
| प्रथमः अंशः | सांख्यदर्शनस्य आमुखम्,सांख्यकारिका प्रथम कारिकातः द्वादश कारिकापर्यन्तम् (1-12 ) |
| द्वितीयः अंशः | 13 कारिकातः 25 कारिकापर्यन्तम् |
| तृतीयः अंशः | 26 कारिकातः 35 कारिकापर्यन्तम् |
| चतुर्थःअंशः | 36 कारिकातः 40 कारिकापर्यन्तम् |

| | Course Outcomes | प्र.प्रयो | प्र.वि.प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 1 | सामान्यतः दर्शनानां परिचयः | | PO 1 | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |
| CO 2 | साङ्ख्यमतरीत्या तत्त्वानाम् अवगतिः । | PO 1 | PSO 7 | ज्ञा | | 12 |
| CO 3 | साङ्ख्यमतरीत्या प्रमाणस्वरूपावगतिः। | PO 1, | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO 4 | सत्कार्यवादप्रक्रियाया अवगमनम्। | PO 1, | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |
| CO 5 | त्रिगुणानां स्वरूपावगतिः। | PO 1, | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |
| CO 6 | साङ्ख्यमतरीत्या सृष्टिप्रकियाया अवगमः | PO 1 | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |
| CO 7 | साङ्ख्यमतरीत्या मोक्षकारणविज्ञानम् | PO 1, | PSO 7 | ज्ञा | | 8 |

**प्रधानतया पाठ्यग्रन्थः –**

श्री ईश्वरकृष्णप्रणीता सांख्यकारिका (1-40)

**अवलोकनीयः ग्रन्थः**

सर्वदर्शनसङ्ग्रहः

# Course 3

## VIBUNYS-543 – Theory of Argumentation in Nyaya and Modern Law

### Credits - उपलब्धिः - 4

### Course Objectives – उद्देश्यानि

1. Nyaya theories of analysis – study on Pramanas
2. Argumentation in Nyaya– studyon categories from Avayava to Nigrahasthanam.
3. Resemblance and influence of Nyaya methods of analysis and argument in jurisprudence
4. Symbolic relationship between Mimamsa, Dharmasasatra and Indian jurisprudence

### Unit-wise Distribution

प्रथमांशः – न्याये प्रमाणनिरूपणस्य अवगमः

द्वितीयांशः-न्याये वादप्रक्रियाम् अधिकृत्य विशेषावगमः

तृतीयांशः-न्याये वादप्रक्रियायाः भारतीयनियमशास्त्रे प्रभावस्य अवगमः,परिशीलनम् च

चतुर्थांशः–मीमांसायाः धर्मशास्त्रस्य च भारतीयनियमशास्त्रे प्रभावस्य अवगमः

| | Course Outcomes | प्र.प्रयो | प्र. वि. प्रयो. | धा | ज्ञा.ग. | कक्ष्या समयः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO1 | न्यायशास्त्रस्य परिचयः, उद्देश्यस्य अवगमः च | PO1 PSO3 | | U | C | 10 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| CO2 | प्रमाणानाम् अवगमद्वारा परिशीलनप्रक्रियायाः अवगमः | PO1<br>PSO3<br>PSO5 | | U | C | 10 |
| CO3 | वादे उपयोगिनां अवयवतर्कनिर्णयादीनांन्यायपदार्थानाम् अवगमः | PO1<br>PSO3 | | U | C | 10 |
| CO4 | न्याये वादप्रक्रियायाः अवगम: | PO1<br>PSO3 | | U | C | 10 |
| CO5 | प्राचीनभारतीयनियमशास्त्रे वादप्रक्रियायां न्यायप्रक्रियायाः अवगमः, परिशीलनं च | PO1<br>PSO3 | | R | C,P | 10 |
| CO6 | मीमांसायाः वेदान्तस्य च वादप्रक्रियायाम् उपयोगस्य अवगमद्वारा भारतीयदर्शनानां प्रसक्ततायाः अवगमः परिशीलनं च | PO1<br>PSO3 | | U | C,P | 10 |

## Core Reading

Nyaya sutra with Nyaya bhashya – Ch I & II

## Reference Texts


- Nyaya parisuddhi of Vedanta Desika, (portion from Vada to Nigrahasthanam)
- Ancient Indian Jurisprudence – Justice Markandey Katju, Judge, Suprem court of India, Speech delivered at BHU, Varanasi.
- Early Indian Jurisprudence, Archana Misra,
- An introduction to Ancient Indian jurisprudence, Shodhganga.